IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 787

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal Volume 11, Iss 02, 2022

मध्य प्रदेश के सिवनी और बालाघाट जिलों में कृषि उद्योगों का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

श्रीकान्त नामदेव

शोधार्थी, गोविन्दराम सेकसरिया अर्थ–वाणिज्य, महाविद्यालय, जबलपुर

डॉ. सीमा पटारिया

सहायक प्राध्यापक, शासकीय कला महाविद्यालय, पनागर, जबलपुर

सार – यह शोध मध्य प्रदेश के सिवनी और बालाघाट जिलों में कृषि आधारित उद्योगों का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन इन क्षेत्रों में कृषि उद्योगों की वर्तमान स्थिति, प्रमुख चुनौतियों और विकास की संभावनाओं का गहन परीक्षण करता है। कृषि उद्योग स्थानीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं, विशेष रूप से रोजगार सृजन और आय उत्पादन में। क्षेत्र के प्रमुख कृषि उद्योगों में धान प्रसंस्करण, दाल मिल, तेल मिल, और वन–आधारित उत्पाद शामिल हैं। प्रमुख चुनौतियों में अपर्याप्त बुनियादी ढांचा, तकनीकी ज्ञान की कमी, और वित्तीय संसाधनों तक सीमित पहुंच शामिल है। जैविक उत्पादों का प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन, और निर्यात–उन्मुख उत्पादन में विकास की उच्च संभावनाएं हैं। सरकारी नीतियों का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है, लेकिन अधिक लक्षित समर्थन आवश्यक है। कुछ उद्योगों के पर्यावरणीय प्रभाव चिंता का विषय हैं और इन्हें संबोधित किया जाना चाहिए। अध्ययन इन क्षेत्रों में कृषि उद्योगों के महत्व को रेखांकित करता है और सतत विकास के लिए एक समग्र रणनीति की आवश्यकता पर बल देता है।

मुख्य शब्दः कृषि उद्योग, सिवनी, बालाघाट, मध्य प्रदेश, आर्थिक विकास, रोजगार सृजन, धान प्रसंस्करण, दाल मिल, तेल मिल, वन–आधारित उत्पाद, बुनियादी ढांचा, तकनीकी ज्ञान, वित्तीय संसाधन, जैविक उत्पाद, मूल्य संवर्धन, निर्यात–उन्मुख उत्पादन, सरकारी नीतियां, पर्यावरणीय प्रभाव, सतत विकास।

कृषि आधारित उद्योग

मध्यप्रदेश, भारत का दूसरा सबसे बड़ा राज्य है, जो प्राकृतिक संसाधनों, स्वास्थ्यकर वातावरण और उपजाऊ कृषि वातावरण स्थितियों से संपन्न है। पिछले कुछ वर्षों में भारतीय अर्थव्यवस्था में काफी बदलाव आया है। बाजार की ताकतों ने औद्योगिक क्षेत्रों में निवेश प्रवाह को निर्देशित करना शुरू कर दिया है। आर्थिक विकास के लिए औद्योगिक विकास में निवेश बढाना, मध्यप्रदेश के लिए प्रमुख केंद्रित क्षेत्रों में से एक है। आज के दौरान 11. 98% की वार्षिक वृद्धि दर के साथ मध्यप्रदेश, भारत में सबसे तेजी से विकसित हो रहे प्रभावशाली राज्यों में से एक है। तेजी से विकसित हो रहा यह राज्य विभिन्न क्षेत्रों में भारी व्यापार के अवसर प्रदान करता है। मध्यप्रदेश में निवेशकों को परियोजना के स्थान, बुनियादी ढांचे, प्रोत्साहन और अन्य सुविधाओं के मामले में बेहतर विकल्प उपलब्ध है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 787

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal Volume 11, Iss 02, 2022

वर्तमान समय में विभिन्न चरणों में 104 अरब से अधिक अमरिकी डॉलर वाले भावी निवेश प्रस्ताव राज्य के समक्ष है।[1]

मध्यप्रदेश में उद्योग काफी हद तक प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर है। यहां चूना पत्थर, कोयला, तिलहन, दालें, बॉक्साइट, लौह अयस्क, हीरा, तांबा अयस्क, मैंगनीज अयस्क, रॉक फॉस्फेट, सिलिका, सोया, कपास और अन्य प्राकृतिक संपदा प्रचुर मात्रा में है। राज्य में कपड़ा, सीमेंट, इस्पात, खाद्य प्रसंस्करण, ऑटोमोबाइल और ऑटो कम्पोनेंट, फार्मा और ऑप्टिकल फाइबर जैसे क्षेत्रों के लिए एक मजबूत औद्योगिक नींव बनी हुई है। राज्य में निवेश को आकर्षित करने के लिए मध्यप्रदेश संसाधनों से समृद्ध राज्य है। प्रगतिशील नीतियों और सक्रिय उपायों के माध्यम से सरकार लगातार कारोबारी माहौल में सुधार कर रही है। मध्यप्रदेश के संसाधनों और निवेश के अवसरों के बारे में निवेशकों में जागरूकता पैदा करने के लिए राज्य सरकार राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय निवेशकों की संगोष्ठी का आयोजन करती है। अपने संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग और निवेशकों के लिए एक सुविधाजनक वातावरण बनाने पर ध्यान देते हुए, मध्यप्रदेश बहुत जल्द ही औद्योगिक समुदाय के लिए सबसे पसंदीदा गंतव्य बनने की उम्मीद रखता है।[2]

कृषि आधारित उद्योगों के प्रकार

कृषि आधारित उद्योगों में, मुख्य रूप से चार प्रकार होते हैं: कृषि–उत्पादित प्रसंस्करण इकाइयाँ, कृषि–इनपुट निर्माण इकाइयाँ, कृषि उत्पाद निर्माण इकाइयाँ और कृषि–सेवा केंद्र। उन्हें नीचे समझाया गया है:

- **कृषि–उत्पाद प्रसंस्करण इकाइयाँ**: ये उद्योग कृषि–आधारित कच्चे माल के प्रसंस्करण और बाद में उपयोग के लिए उन्हें संरक्षित करने से संबंधित हैं और कृषि कच्चे माल के लिए उप–उत्पादों का उपयोग करने से संबंधित हैं।
- **कृषि–उत्पाद निर्माण इकाइयां**: इस कृषि–आधारित उद्योग का उपयोग कच्चे माल के निर्माण के लिए किया जाता है और निर्माण प्रक्रिया पूरी होने के बाद तैयार माल उपयोग किए गए कच्चे माल से अलग होता है।
- **कृषि आदान निर्माण इकाइयाँ**: इस प्रकार के उद्योग में जिन उत्पादों का निर्माण किया जाता है, उनका उपयोग कृषि उत्पादन में सुधार के लिए आगतों के रूप में किया जाता है।
- **कृषि सेवा केंद्र**: ये सेवा केंद्र ज्यादातर कृषि से संबंधित सभी उपकरणों की मरम्मत और सर्विसिंग से संबंधित होते हैं और कृषि आधारित उद्योगों का हिस्सा होते हैं क्योंकि वे विशेष रूप से कृषि उपकरणों से संबंधित होते हैं।

[1] कचरू आर.पी., भारत में कृषि–प्रसंस्करण उद्योग–विकास, स्थिति और संभावनाएं; भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली, 2008।

[2] बदर ए इकबाल, ''कृषि–आधारित उद्योग: प्रदर्शन और संभावनाएं'', प्रिंटवेल पब्लिशर्स, पृ. 3, 1981।

IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 787

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal Volume 11, Iss 02, 2022

कृषि आधारित उद्योग के उदाहरण

कृषि आधारित उद्योग विभिन्न प्रकार के होते हैं और कई प्रकार से संचालित होते हैं। सभी प्रकार के उद्योगों में यह समानता है कि सभी कृषि उत्पादों को कच्चे माल के रूप में उपयोग करते हैं। कुछ उदाहरण नीचे सूचीबद्ध हैं:

उद्योग का प्रकार	उदाहरण
कृषि–उत्पादन प्रसंस्करण इकाइयाँ	दाल और चावल प्रसंस्करण मिलें
कृषि उत्पाद निर्माण इकाइयाँ	चीनी कारखाने, कपड़ा कारखाने और बेकरी
एग्रो इनपुट्स मैन्युफैक्चरिंग यूनिट्स	उर्वरक, कीटनाशक और उपकरण
कृषि सेवा केंद्र	सेवा के साथ–साथ खेती के उपकरण जैसे ट्रैक्टर, डीजल इंजन आदि की मरम्मत।

तालिका 1

जिला सिवनी कृषि विकास प्लान– खरीफ 2021 मुख्य फसलें

फसल	क्षेत्राच्छादन (हजार है.)	उत्पादन (मैट्रिक टन)	उत्पादकता (कि.ग्रा./है.)
	2021	**2021**	**2021**
धान	240	859.2	3580
मक्का	137	294.6	2150
ज्वार	0.2	0.3	1400
कोदो कुटकी	2.5	1.0	415
तुअर	15	31.2	2080
उड़द	9.5	7.1	750
मूंग	2.0	1.3	630
सोयाबीन	20	28	1370
मूंगफली	5	6.9	1400
तिल	2	1.2	610
रामतिल	1.5	0.8	350
योग	**434.7**	**1231.5**	—

स्रोतः कृशि कल्याण विभाग सिवनी, 2021।

उद्यमिता विकास कार्यक्रम

बढ़ती हुई बेरोजगारी को ध्यान में रखते हुए औद्योगिक विकास में गति देने एवं बोरोजगार शिक्षितप्रशिक्षित एवं तकनीकी (कुशल) व्यक्तियों को अपना उद्योग व्यवसाय करने हेतु स्वरोजगार उपलब्ध कराये जाने के दृष्टिकोण से यह योजना र प्रदेश सरकार द्वारा वर्ष 1978–79 से संचालित की गयी।

औद्योगिक इकाइयों को स्थापित करने एवं सफलता पूर्वक चलाने के लिए यह अति आवश्यक है कि उद्यमी को सभी प्रकार की जानकारी हो। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु स्थानीय आवश्यकता के अनुरूप उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया जा रहा है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 787

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal Volume 11, Iss 02, 2022

जिला सिवनी–बालाघाट में जिला उद्योग केन्द्र के माध्यम से प्रत्येक वर्ष उद्यमिता विकास कार्यक्रम आयोजित कर उद्यमियों को उद्योग स्थापित करने हेतु प्रशिक्षण देकर प्रेरित किया जाता है।

कृषि आधारित उद्योगों में रोजगार– पलारी

1800 कृषि आधारित औद्योगिक कामगार है, जो कुल कामकाजी आबादी का 41.38 प्रतिशत हैं। इन कृषि आधारित औद्योगिक श्रमिकों में से कुल कार्यशील आबादी का 20.69 प्रतिशत है। उनमें से अधिकांश धान मिल में दाल और आटा मिलों में और अन्य कृषि आधारित औद्योगिक इकाइयों में कार्यरत हैं। स्थायी कर्मचारियों के रूप में 279, मौसमी स्थायी के रूप में 271 और उनमें से 360 कार्यकर्ता हैं। आकस्मिक श्रमिक वर्कर और अधिकांश मौसमी कर्मचारी धान मिल में अपने रोजगार के अलावा कृषि दैनिक मजदूरी कार्य में लगे हुए हैं क्योंकि उनका रोजगार उन्हें मौसमी प्रकृति से मजबूत करता है. इसलिए वे अन्य रोजगार में भी अपना हाथ आजमाते हैं। इस प्रकार धान मिल की स्थापना ने गाँव में प्रच्छन्न बेरोजगारी और कम रोजगार को कम करने में मदद की है, जिससे आय के स्तर में वृद्धि हुई है और गाँव की सामाजिक आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है।[3]

पलारी गाँव रेलवे क्रॉसिंग के पूर्व में सिवनी– मण्डला रोड पर स्थित है। यह 42 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह केवलारी तहसील के केवलारी विकास खंड के अंतर्गत आता है।

पलारी में 200 एकड़ का क्षेत्र है। यह सड़क परिवहन और बिजली सुविधाओं से सुसज्जित है। गाँव की आने वाली युवा पीढ़ी को शिक्षा प्रदान करने के लिए इसमें 2 प्राथमिक स्कूल और एक जूनियर हाई स्कूल है। सड़कें, कई अन्य गाँवों की तरह दो प्रकार की होती है कच्ची और पक्की यानी ठेठ कीचड़ वाली सड़कें और कोलतार सड़कें।

कृषि आधारित उद्योगों की लाभदायकता

कृषि आधारित उद्योग तुलनात्मक रूप से कम निवेश वाले होते हैं, ग्रामीण क्षेत्र में आय स्थापित करने वाले और रोजगार प्रदान करने वाले होते हैं। यह उद्योग कृषि आधारित कच्चे माल के प्रभावी व कुशल उपयोग की सुविधा प्रदान करते हैं।

सामान्यतः कृषि आधारित उद्योगों की आर्थिक स्थिति इस बात पर निर्भर नहीं करती है कि वह कितनी संख्या में है बल्कि इस बात पर निर्भर करती है कि वह कितना उत्पादन करता है व किस प्रकार आगे की क्रियाऐं जैसे विपणन, वितरण, भंडारण आदि का निर्वाहन करता है। यदि कृषि आधारित उद्योगों की संख्या बहुत अधिक हो जायेगी और उत्पादन कम होगा तो कार्य में कमी देखने को मिलेगी। अतः कृषि उत्पादन से भी कृषि उद्योग व इससे जुड़े अन्य उद्योगों के माध्यम से व्यक्तियों को लाभ की स्थिति जानकर कार्य करना पड़ेगा।

[3] के. सुंदरम, ''रोजगार – 1990 के दशक में बेरोजगारी की स्थिति – एनएसएस से कुछ परिणाम, 55 वें दौर का सर्वेक्षण।'' आर्थिक और राजनीतिक, साप्ताहिक, मार्च 17 2001, 936।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 787

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal Volume 11, Iss 02, 2022

आजादी के 73 साल पूरे होने पर देश में कई मामलों में मुख्यतः कृषि व ग्रामीण क्षेत्र के विकास में लंबी छलांग लगाई है। आज देश कृषि आधारित उद्योगों का जाल बिछाने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। इन उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए सड़क, बिजली, पानी, आसान ऋण की व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता है। भारत विश्व में सबसे तेजी से आगे बढ़ती हुयी अर्थव्यवस्था है आर्थिक विकास की दृष्टि से भारत में कृषि आधारित उद्योगों का महत्वपूर्ण स्थान है। राष्ट्रीय आय में 14.8 प्रतिशत योगदान के साथ–साथ देश की कृषि 65 प्रतिशत आबादी को रोजगार प्रदान करता है। विश्व में दूध, केला, आम, मसाले, झींगा मछली और दालों के उत्पादन में भारत का प्रथम स्थान है। इसके अलावा अनाजों, सब्जियों और चाय का भारत दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है।

कृषि उद्योगों से रोजगार प्राप्त होने की संभावनाऐं

कृषि आधारित उद्योग ऐसे उद्योग हैं जो अपने कच्चे माल के रूप में पौधे और पशु–आधारित कृषि उत्पादन का उपयोग करते हैं। साथ ही, वे विपणन योग्य और प्रयोग करने योग्य उत्पादों का प्रसंस्करण और उत्पादन करके कृषि उत्पादन में मूल्य जोड़ते हैं। भारत में कृषि आधारित उद्योगों के कुछ उदाहरणों में कपड़ा, चीनी, वनस्पति तेल, चाय, कॉफी और चमड़े के सामान उद्योग शामिल हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में श्रम बढ़ाने और परिवारों की आजीविका को बनाए रखने के लिए रोजगार के अवसर पैदा करने की बढ़ती चुनौतियों का समाधान करने में एक महत्वपूर्ण कारक रहा है। विकल्प के रूप में उभर रहा है।

पिछले कुछ वर्षो में, उद्योग के साथ आगे–पीछे संबंध बनाने के माध्यम से कृषि परिवर्तन ग्रामीण क्षेत्रो मे श्रम बढ़ाने और परिवारों की आजीविका को बनाए रखने के लिए रोजगार के अवसर पैदा करने की बढ़ती चुनौतियो का समाधान करने में एक महत्वपूर्ण कारक रहा है। विकल्प के रूप में उभर रहा है। कृषि–प्रसंस्करण में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि चूंकि उनमें संसाधित कच्चे माल का एक बड़ा हिस्सा ग्रामीण आधारित है, इसलिए इसमें बहुत कम निवेश के साथ रोजगार की बड़ी संभावनाएं हैं। इसके अलावा कृषि–उद्योग कृषि क्षेत्र पर अधिक और विभिन्न कृषि उत्पादों के लिए नई मांग उत्पन्न करता है, जो प्रसंस्करण के लिए अधिक उपयुक्त हैं। दूसरी ओर, न उद्योगों के विकास से उनके उत्पादों की आपूर्ति में वृद्धि करके आर्थिक विकास के लिए मजदूरी के सामानों की बाधाओं को कम किया जा सकता है। घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजारों के लिए स्वीकार्य 2 मूल्य वर्धित उत्पादों के उत्पादन के हिस्से को कुशलतापूर्वक परिवर्तित करने का आदेश। इससे खाद्य प्रसंस्करण, संकुलन, श्रेणीकरण और वितरण के माध्यम से विभिन्न प्रकार के कौशल के लिए रोजगार के अवसर पैदा होंगे। साथ ही यह बाजार संबंध के माध्यम से किसानों को एक आकार का नफा हस्तांतरित करेगा।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 787

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal Volume 11, Iss 02, 2022

तालिका संख्या 2

कृषि आधारित उद्योगों के स्थापना से गांवों के आर्थिक विकास में कैसा प्रभाव हुआ है?

क्रमांक	विवरण	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
1	अच्छा	600	30
2	बहुत अच्छा	1140	57
3	सामान्य	260	13
	कुल	**2000**	**100**

प्रस्तुत तालिका 2 से यह स्पष्ट है कि 600 (30) प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा गांवों के आर्थिक विकास में अच्छा प्रभाव हुआ हैं, 1140 (57) प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा गांवों के आर्थिक विकास में बहुत अच्छा प्रभाव हुआ हैं एवं 260 (13) प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा गांवों के आर्थिक विकास में सामान्य प्रभाव हुआ हैं।

ग्राफ संख्या 2

कृषि आधारित उद्योगों के स्थापना से गांवों के आर्थिक विकास में कैसा प्रभाव हुआ है?

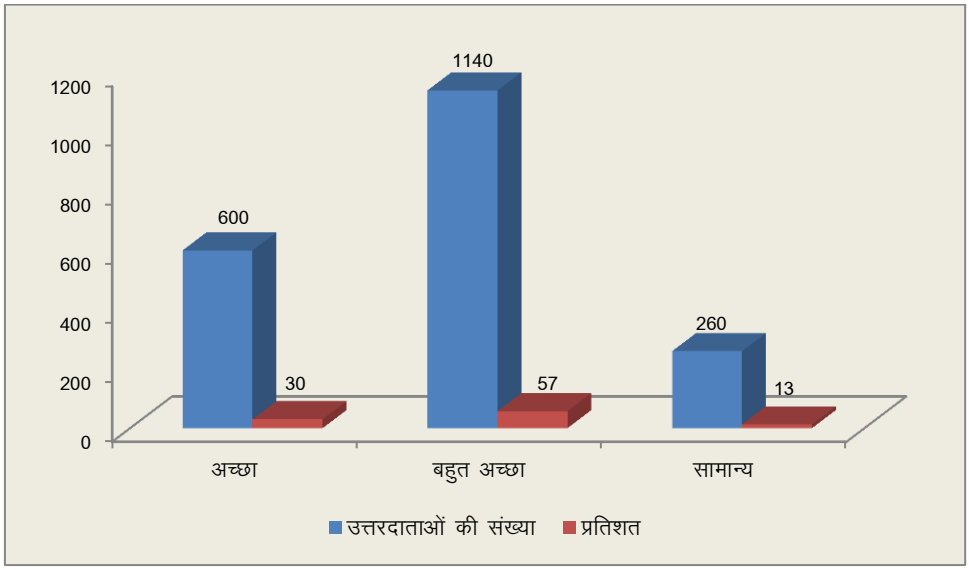

IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 787

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal Volume 11, Iss 02, 2022

तालिका संख्या 3

कृषि आधारित उद्योगों के कारण कौन–कौन से आर्थिक सूचकांकों में सुधार दिखाई दी हैं?

क्रमांक	विवरण	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
1	औद्योगिक प्रगति	820	41
2	पूंजी निर्माण	580	29
3	प्रति व्यक्ति आय	320	16
4	जीवन सूचकांक	280	14
	कुल	**2000**	**100**

प्रस्तुत तालिका 3 से यह स्पष्ट है कि 820 (41) प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा गांवों में औद्योगिक प्रगति हुई हैं, 580 (29) प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा गांवों में पूंजी निर्माण हुआ हैं, 320 (16) प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा गांवों में प्रति व्यक्ति आय बढ़ी हैं, एवं 280 (14) प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा गांवों में जीवन सूचकांक में वृद्धि हुई।

ग्राफ संख्या 3

कृषि आधारित उद्योगों के कारण कौन–कौन से आर्थिक सूचकांकों में सुधार दिखाई दी हैं?

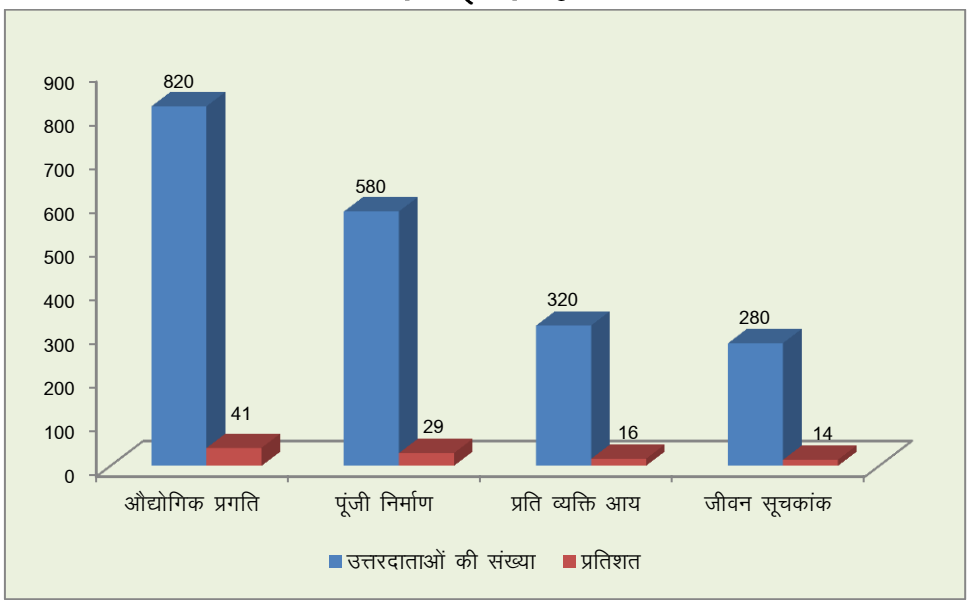

IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 787

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal Volume 11, Iss 02, 2022

तालिका संख्या 4

गांवों की सकल घरेलू उत्पाद या प्रति व्यक्ति आय में कोई धाराप्रवाहिक परिवर्तन दिखाई दे रहा है?

क्रमांक	विवरण	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
1	हाँ	1480	74
2	नहीं	520	26
	कुल	**2000**	**100**

प्रस्तुत तालिका 4 से यह स्पष्ट है कि 1480 (74) प्रतिशत उत्तरदाताओं ने 'हाँ' में उत्तर दिया कि गांवों की सकल घरेलू उत्पाद या प्रति व्यक्ति आय में धाराप्रवाहिक परिवर्तन दिखाई दे रहा है, वहीं 520 (26) प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिया। इससे इससे स्पश्ट है कि सकल घरेलू उत्पाद या प्रति व्यक्ति आय में धाराप्रवाहिक परिवर्तन हो रहा है।

ग्राफ संख्या 4

गांवों की सकल घरेलू उत्पाद या प्रति व्यक्ति आय में कोई धाराप्रवाहिक परिवर्तन दिखाई दे रहा है?

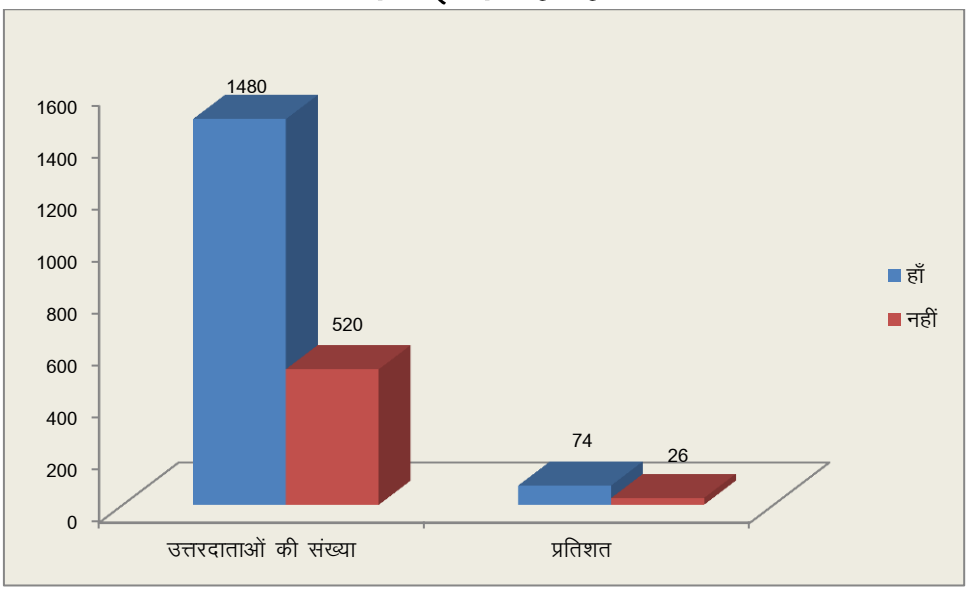

IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 787

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal Volume 11, Iss 02, 2022

तालिका संख्या 5

कृषि आधारित उद्योगों से कृषकों को नौकरियाँ प्राप्त हुई हैं?

क्रमांक	विवरण	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
1	हाँ	1740	87
2	नहीं	260	13
	कुल	**2000**	**100**

प्रस्तुत तालिका 5 से यह स्पष्ट है कि 1740 (87) प्रतिशत उत्तरदाताओं ने 'हाँ' में उत्तर दिया कि उन्हें कृषि आधारित उद्योगों से नौकरियाँ प्राप्त हुई हैं, वहीं 260 (13) प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिया। इससे इससे स्पश्ट है कि कृषि आधारित उद्योगों से कृषकों को नौकरियाँ प्राप्त हो रही हैं।

ग्राफ संख्या 5

कृषि आधारित उद्योगों से कृषकों को नौकरियाँ प्राप्त हुई हैं?

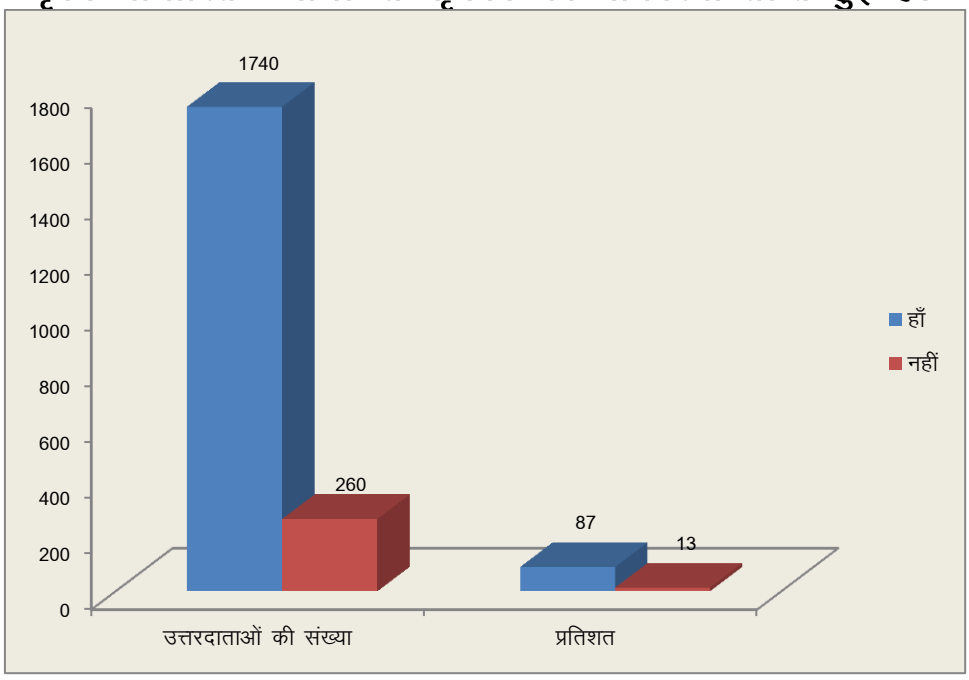

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 787

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal Volume 11, Iss 02, 2022

तालिका संख्या 6

कृषि आधारित उद्योगों द्वारा उत्पन्न रोजगार का सीधा और अप्रत्यक्ष अनुपात क्या है?

क्रमांक	विवरण	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
1	कृषि–आधारित उद्योग खेती	1280	64
2	पशुधन पालन	300	15
3	खाद्य प्रसंस्करण	420	21
	कुल	**2000**	**100**

प्रस्तुत तालिका 6 से यह स्पष्ट है कि 1280 (64) प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा रोजगार का सीधा और अप्रत्यक्ष अनुपात कृषि–आधारित उद्योग खेती है, 300 (15) प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा पशुधन पालन है, 420 (21) प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा खाद्य प्रसंस्करण है।

ग्राफ संख्या 6

कृषि आधारित उद्योगों द्वारा उत्पन्न रोजगार का सीधा और अप्रत्यक्ष अनुपात क्या है?

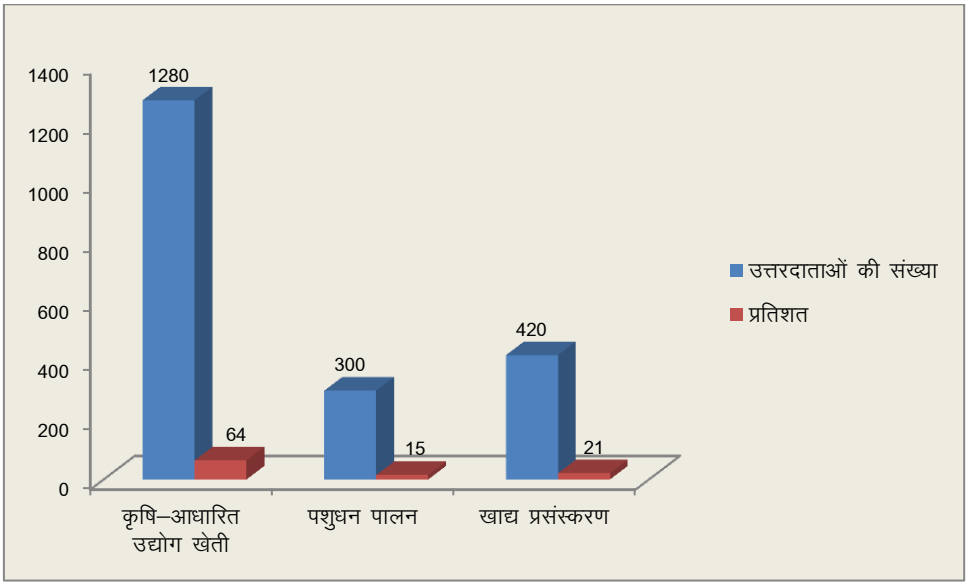

अध्ययन के निष्कर्ष

अध्ययन के अनुसार यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि सिवनी एवं बालाघाट जिले में कृषि आधारित उद्योगों का योगदान आर्थिक विकास में सक्रिय सहभागिता को सुनिश्चित करने में निम्न तरीके प्रभावशाली सिद्ध हो सकते हैं–

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 787

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal Volume 11, Iss 02, 2022

- प्रस्तुत तालिका 2 से यह स्पष्ट है कि 600 (30) % उत्तरदाताओं ने कहा गांवों के आर्थिक विकास में अच्छा प्रभाव हुआ हैं, 1140 (57) प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा गांवों के आर्थिक विकास में बहुत अच्छा प्रभाव हुआ हैं एवं 260 (13) प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा गांवों के आर्थिक विकास में सामान्य प्रभाव हुआ हैं।
- प्रस्तुत तालिका 3 से यह स्पष्ट है कि 820 (41) % उत्तरदाताओं ने कहा गांवों में औद्योगिक प्रगति हुई हैं, 580 (29) प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा गांवों में पूंजी निर्माण हुआ हैं, 320 (16) प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा गांवों में प्रति व्यक्ति आय बढ़ी हैं, एवं 280 (14) प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा गांवों में जीवन सूचकांक में वृद्धि हुई।
- प्रस्तुत तालिका 4 से यह स्पष्ट है कि 1480 (74) प्रतिशत उत्तरदाताओं ने 'हाँ' में उत्तर दिया कि गांवों की सकल घरेलू उत्पाद या प्रति व्यक्ति आय में धाराप्रवाहिक परिवर्तन दिखाई दे रहा है, वहीं 520 (26) प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिया। इससे इससे स्पश्ट है कि सकल घरेलू उत्पाद या प्रति व्यक्ति आय में धाराप्रवाहिक परिवर्तन हो रहा है।
- यह पाया गया कि तालिका 5 से यह स्पष्ट है कि 1740 (87) प्रति ात उत्तरदाताओं ने 'हाँ' में उत्तर दिया कि उन्हें कृषि आधारित उद्योगों से नौकरियाँ प्राप्त हुई हैं, वहीं 260 (13) प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिया। इससे इससे स्पश्ट है कि कृषि आधारित उद्योगों से कृषकों को नौकरियाँ प्राप्त हो रही हैं।
- प्रस्तुत तालिका 6 से यह स्पष्ट है कि 1280 (64) प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा रोजगार का सीधा और अप्रत्यक्ष अनुपात कृषि–आधारित उद्योग खेती है, 300 (15) प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा पशुधन पालन है, 420 (21) प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा खाद्य प्रसंस्करण है।
-

सुझाव

कृषि क्षेत्र औद्योगिक विकास के लिए भोजन, कच्चा माल, रोजगार, आय और अधिशेष प्रदान करके देश के आर्थिक विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हालाँकि, कृषि क्षेत्र ग्रामीण विकास के साथ–साथ औद्योगिक विकास के लिए भी आवश्यक है, लेकिन इस क्षेत्र को कुछ अजीब समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। सुधारों के दौर के बाद इस क्षेत्र की विशेष रूप से उपेक्षा की गई है।

मध्य प्रदेश में कृषि क्षेत्र कई समस्याओं से जूझ रहा है । प्रमुख समस्या विविधीकरण की है। विविधीकरण तब तक नहीं हो सकता जब तक मौजूदा गेहूं–धान फसल पैटर्न का कोई विकल्प विकसित नहीं किया जाता है जो गेहूं–धान जितना ही लाभकारी हो और इन वैकल्पिक फसलों के लिए समान सुनिश्चित विपणन सुविधाएं मौजूद हों। कृषि का विविधीकरण कृषि–आधारित उद्योगों की स्थापना से जुड़ा हुआ है जिसमें

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 787

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal Volume 11, Iss 02, 2022

ग्रामीण लोगों के साथ कुछ व्यवहार शामिल हैं या जहां कृषि उपज के बारे में कुछ ज्ञान प्रसंस्करण और अन्य गतिविधियों में आवेदन के लिए उपयोगी है, और फिर ग्रामीण अर्थव्यवस्था का विकास हो सकता है। कृषि क्षेत्र धीमी वृद्धि और खराब विस्तार सेवाओं को दर्शाता है।

आम तौर पर, कृषि आधारित उद्योगों को आंतरिक और बाहरी दोनों समस्याओं का सामना करना पड़ता है। आंतरिक समस्याएँ वे हैं जो उद्योग के भीतर उत्पन्न हुईं। बाहरी समस्याएँ वे हैं जो उद्यमियों की शक्ति से परे हैं। इन उद्योगों के सामने आने वाली प्रमुख समस्याएँ कच्चे माल की समस्या, प्रबंधन, विपणन, बिजली, प्रौद्योगिकी, परिवहन, पैकेजिंग और वित्त की अपर्याप्तता हैं। इन सभी समस्याओं के अलावा, छोटे पैमाने के कृषि आधारित उत्पादन में बड़े या मध्यम स्तर की औद्योगिक इकाइयों की तरह समायोजन के लिए पर्याप्त धन नहीं होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्रवाल, ए.के. (1991), उत्तर पूर्व भारत में कृषि–आधारित उद्योगों के माध्यम से ग्रामीण विकास – एक परिप्रेक्ष्य, खादी ग्रामोद्योग, वॉल्यूम 37, क्रमांक 3।
2. अहमद, इकबाल एस. (1978), आंध्र प्रदेश में कृषि आधारित उद्योगों का एक अध्ययन, दक्षिणी अर्थशास्त्री, वॉल्यूम 17, क्रमांक 14।
3. अर्पुथराज, सी. (1982), भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था, मैकमिलन इंडिया।
4. आर्य, अनीता और एस. पी. कश्यप (1997), भारत में कृषि–प्रसंस्करण उद्योगों की समस्याएं और संभावनाएं, पीएसई आर्थिक विश्लेषक, खंड 17 और 18, संख्या 1 और 2।
5. बालासुब्रमण्यम, एम (1960) भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि उपज के प्रसंस्करण की भूमिका, इंडियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल इकोनॉमी, खंड 15, नंबर 1।
6. बागलकोटी, एस.टी. (1996), ग्रामीण क्षेत्रों में गैर–कृषि गतिविधियाँः कृषि– प्रसंस्करण के लिए एक मामला, कृषि विकास में अध्ययन में, (संस्करण), एम.वी. गौड़ा और सुशीला सुब्रह्मण्य, दीप और दीप प्रकाशन, दिल्ली।
7. बघेल, लाल मृगेंद्र और नीलकंठ, जी. पेंडसे (1996), मध्य प्रदेश राज्य में औद्योगिक विकास में कृषि आधारित उद्योगों की भूमिका, खादी ग्रामोद्योग, वॉल्यूम 42, क्रमांक 10।
8. बंदरला, अमरनाथ (1991), कृषि–आधारित उद्योगों की समस्याएँ, दक्षिणी अर्थशास्त्री, खंड 30, संख्या 9।
9. बायिनेनी, श्रीनिवासुलु और रमेश बाबू वूका (2004), भारत में कृषि–आधारित उद्योगों का विकास, द आईयूपी जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल इकोनॉमिक्स, वॉल्यूम 2, अंक 3।
10. भल्ला, जी.एस. (1995), एग्रीकल्चरल ग्रोथ एंड इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट इन पंजाब, इन एग्रीकल्चर ऑन द रोड टू इंडस्ट्रियलाइजेशन, (संस्करण) जॉन मेलोर, इंटरनेशनल फूड पॉलिसी रिसर्च इंस्टीट्यूट, जॉन्स हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी प्रेस, बाल्टीमोर और लंदन।
11. भाटिया, गुरबचन कौर (2008), पंजाब में ग्रामीण औद्योगीकरणः वैश्वीकरण और पंजाब अर्थव्यवस्था में ग्राम उद्योगों की भूमिकाः कृषि और लघु उद्योग में मुद्दे, (संस्करण), आर.एस. बावा, पी.एस. रायखी और परमजीत कौर जीएनडीयू प्रकाशन, अमृतसर।
12. बोनिला, यूजेनियो डियाज़ और लुसियो रेका (2000), विकासशील देशों में व्यापार और कृषि–औद्योगीकरणः रुझान और नीति प्रभाव, कृषि अर्थशास्त्र, वॉल्यूम 23, क्रमांक 3।
13. चड्ढा, जी.के. और पी.पी. साहू (2003), भारत में लघु–स्तरीय कृषि–उद्योगः कम उत्पादकता ही इसकी कमज़ोरी है, इंडियन जर्नल ऑफ़ एग्रीकल्चरल इकोनॉमिक्स, वॉल्यूम 58, क्रमांक 3।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 787

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal Volume 11, Iss 02, 2022

14. चड्ढा, विक्रम और नीरू चड्ढा (2008), ग्रामीण औद्योगीकरण पर एक क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्यः मध्यप्रदेश अर्थव्यवस्था का मामला, जर्नल ऑफ रूरल डेवलपमेंट, वॉल्यूम 27, क्रमांक 2।
15. चोपड़ा, विपला (1997), कृषि अधिशेष और संसाधन जुटाना, अनमोल प्रकाशन प्रा. लिमिटेड, नई दिल्ली।